संस्थान समाचार

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी) संस्था और उसके केंद्रों की समाचार पत्रिका

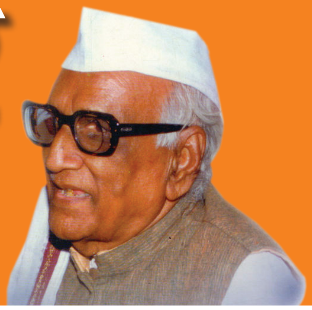

■ प्रकाशन : वर्ष : 11 ■ अंक : 71 ■ जुलाई 2025

संस्थान के पूर्व निदेशक-द्वय बने कुलपति

केंद्रीय हिंदी संस्थान के पूर्व निदेशक (18.8.2015 से 17.8.2020 तक) रहे प्रो. नंदकिशोर पांडेय को राजस्थान की सरकार ने हरदेव जोशी पत्रकारिता और जनसंचार विश्वविद्यालय, जयपुर के कुलपति पद पर नियुक्ति दी है। प्रो. पांडेय का कार्यकाल तीन वर्ष अथवा 70 साल की आयु पूर्ण होने (जो भी पहले हो) तक का होगा। ❑

इसी प्रकार केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा के पूर्व में निदेशक (30.8.2011 से 17. 8.2015 तक) रहे प्रो. मोहन को श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, सिक्किम का कुलपति बनाया गया है।

दोनों पूर्व निदेशकों की नई नियुक्ति से संस्थान कर्मियों में हर्ष की लहर है। ❑

व्यक्ति को आत्मनिर्भर, राष्ट्र को सशक्त बनाती है शिक्षा : प्रधानमंत्री

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है कि शिक्षा वह माध्यम है जो व्यक्ति को आत्मनिर्भर और राष्ट्र को सशक्त बनाती है। पिछले 5 वर्षों में शिक्षा के क्षेत्र में कई सकारात्मक बदलाव हुए हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, अनुसंधान और नवाचार को प्रोत्साहित करके छात्रों के समग्र और बहुआयामी विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के 5 वर्ष पूरे होने पर अपने एक संदेश में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के जरिए शिक्षा के क्षेत्र में अनेक नवाचार शुरू किए गए हैं।

सरकार का उद्देश्य ऐसी शिक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करना है जिसमें विद्यार्थी अपनी रुचि, क्षमता और सपनों के अनुसार आगे बढ़ सकें।

आज देश गौरवशाली भारतीय संस्कृति से जुड़ी शिक्षा को तकनीक और

'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' के 5 वर्ष प्रधानमंत्री का वक्तव्य

वैश्विक मानकों से सुसज्जित करके प्रगति के पथ पर अग्रसर है।

प्रधानमंत्री ने कहा है कि पिछले 5 वर्षों में शिक्षा के क्षेत्र में अनेक सकारात्मक बदलाव हुए हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति अनुसंधान और नवाचार को प्रोत्साहित करके विद्यार्थियों के समग्र बहुआयामी विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सरकार शिक्षा को अधिक सुलभ, व्यावहारिक तथा कौशल उन्मुख बनाने पर काम कर रही है ताकि रोजगार के अवसरों के साथ-साथ यह सुनिश्चित हो सके कि छात्र गतिशील वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए उपयुक्त हों।

अपने संदेश में उन्होंने यह भी कहा है कि अमृत काल में भारत एक भव्य और विकसित राष्ट्र के निर्माण की ओर तेजी से बढ़ रहा है। इस दौरान हमारे युवाओं के आत्मविश्वास, जिज्ञासा और रचनात्मकता को बढ़ावा देने में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भूमिका महत्वपूर्ण है। ❑

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2025 का मंत्र है भारतीयता

केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान ने एनईपी 2020 के 5 वर्ष पूरा होने के उपलक्ष्य में दिल्ली में आयोजित अखिल भारतीय शिक्षा समागम 2025 का उद्घाटन करते हुए कहा कि पिछले 5 वर्षों में एनईपी 2020 की शिक्षा प्रणाली में एक प्रतिमान परिवर्तन के साथ कक्षाओं तक पहुँचने में सफल हुए हैं। उन्होंने कहा कि भारतीयता ही नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का मूल मंत्र है।

वैज्ञानिक शिक्षा नवाचार अनुसंधान भारतीय ज्ञान परंपरा, भारतीय भाषाओं को केंद्र में रखते हुए सरकार शिक्षा को राष्ट्र निर्माण के व्यापक उद्देश्य से जोड़ रही है।

केंद्रीय शिक्षा मंत्री ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सफल क्रियान्वयन के 5 वर्ष पूरे होने पर सभी देशवासियों और विशेष कर युवा साथियों को अनेक शुभकामनाएँ दीं। उन्होंने कहा कि यह नीति माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की उस परिवर्तनकारी कल्पना को दर्शाती है जिसमें उन्होंने शिक्षा को भारत के विकास की गाथा का केंद्र बिंदु बनाया है।

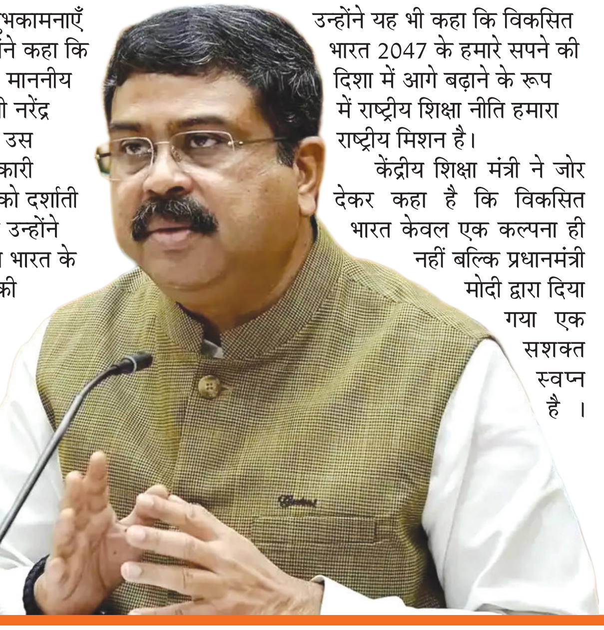

उन्होंने यह भी कहा कि विकसित भारत 2047 के हमारे सपने की दिशा में आगे बढ़ाने के रूप में राष्ट्रीय शिक्षा नीति हमारा राष्ट्रीय मिशन है।

केंद्रीय शिक्षा मंत्री ने जोर देकर कहा है कि विकसित भारत केवल एक कल्पना ही नहीं बल्कि प्रधानमंत्री मोदी द्वारा दिया गया एक सशक्त स्वप्न है।

एनईपी 2020 इस सपने को साकार करने का सबसे सशक्त माध्यम है उन्होंने सभी साझेदारों से आग्रह किया कि वे केंद्रित और सक्रिय कदम उठाएँ ताकि हर कक्षा अध्ययन का एक सार्थक स्थान बने और हर बच्चे की प्रतिभा को संवारा जा सके।

उन्होंने कहा कि अखिल भारतीय शिक्षा समागम केवल एक सम्मेलन नहीं बल्कि विकसित भारत के निर्माण हेतु हमारे साझा संकल्प की अभिव्यक्ति है। उन्होंने सभी से पूरे मन से एनईपी 2020 के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए प्रतिबद्ध होने का आह्वान किया।

दिल्ली के प्रगति मैदान स्थित भारत मंडपम में आयोजित अखिल भारतीय शिक्षा समागम 2025 में देश के प्रमुख शिक्षाविदों, नीति निर्माताओं, शिक्षकों, उद्योगपतियों और सरकारी प्रतिनिधियों

शेष पृष्ठ 7 पर

भाषा संवर्धनात्मक पाठ्यक्रम आयोजित

नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग द्वारा दिनांक 15.07.2025 से 01.08.2025 तक जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, डाइट लुंगलेई, मिजोरम के डी.एल.एड. पाठ्यक्रम के 33 प्रशिक्षणार्थियों हेतु हिंदी भाषा संवर्धनात्मक पाठ्यक्रम संचालित किया गया। पाठ्यक्रम का उद्घाटन दिनांक 15.07.2025 को प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस अवसर पर अपनी बात रखते हुए उन्होंने कहा कि, हिंदी जोड़ने का कार्य करती है। हिंदी राज्यों के बीच मध्यस्थता का कार्य करती है। कार्यक्रम में जिला, शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान डाइट लुंगलेई मिजोरम से पधारे व्याख्याता श्री जेडललरमथारा, नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. सपना गुप्ता, पूर्वोत्तर शिक्षण सामग्री निर्माण विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. मीनाक्षी दुबे, अनुसंधान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अरिमर्दन त्रिपाठी की गरिमामयी उपस्थिति रही। प्रो. सपना गुप्ता ने प्रशिक्षण में हिंदी संबंधित प्राप्त होने वाले ज्ञान के बारे में जानकारी प्रेषित की।

पाठ्यक्रम में निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, शैक्षिक समन्वयक प्रो. हरिशंकर, पूर्वोत्तर शिक्षण सामग्री निर्माण विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. मीनाक्षी दुबे द्वारा हिंदी भाषा की संरचना एवं भाषा तुलना प्रविधि पर विशेष व्याख्यान दिए गए। प्रो. सपना गुप्ता, डॉ. अरिमर्दन त्रिपाठी, डॉ. शिखा माहेश्वरी द्वारा कक्षाए ली गई। प्रशिक्षणार्थियों ने अवकाश दिवसों में ऐतिहासिक स्थलों का शैक्षिक संदर्शन किया। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन असिस्टेंट प्रो. डॉ. शिखा माहेश्वरी द्वारा किया गया।

जोड़ने का काम करती है हिंदी: निदेशक

पाठ्यक्रम का समापन समारोह दिनांक 01.08.2025 को प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा की अध्यक्षता में किया गया। उन्होंने मिजोरम से आये प्रशिक्षणार्थियों को अधिक मेहनत करने एवं आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान डाइट लुंगलेईमिजोरम से पधारे व्याख्याता श्री जेडललरमथारा ने अध्यापकों द्वारा दिए गए प्रशिक्षण की सराहना की एवं आभार व्यक्त किया। पाठ्यक्रम संयोजक प्रो. सपना गुप्ता ने अपने वक्तव्य में कहा कि,ये सभी प्रशिक्षणार्थी हिंदी के संवाहक हैं। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. शिखा माहेश्वरी द्वारा किया गया। ❑

'भारतीय संस्कृति एवं दर्शन' विषय पर व्याख्यान

केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा के अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग में 8 जुलाई से 21 जुलाई 2025 तक श्रीलंका सरकार के अधीन सेवारत हिंदी शिक्षकों के लिए आयोजित पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के अंतर्गत दिनांक 11 जुलाई 2025 को 'भारतीय संस्कृति एवं दर्शन' विषय पर एक विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया। विशिष्ट व्याख्याता की भूमिका निभा रहे पूर्व बेसिक शिक्षा मंत्री डॉ रवींद्र शुक्ल ने भारत शब्द की उत्पत्ति, द्वैत अद्वैत का भेद, भारतीय दर्शन तथा विश्व में सबसे अधिक समृद्ध भारत की पुरातन संस्कृति पर अपना व्याख्यान दिया।

उन्होंने बताया कि भारत शब्द का वर्णन ऋग्वेद में मिलता है जिसमें 'भ' का अर्थ है ज्ञान तथा 'रत' का अर्थ है रमा हुआ, अर्थात जो निरंतर ज्ञान में रमा रहे वही भारत है।

उन्होंने बताया कि अपने ज्ञान के इस प्रकाश के कारण ही भारत विश्व गुरु बना। सर्वजन हिताय ही भारत का मूल मंत्र है। भारतीय संस्कृति की समन्वयवादी विचारधारा पर भी उन्होंने विशेष प्रकाश डाला।

इस कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष डॉ जोगेंद्र सिंह मीणा, डॉ दीपा मणि बरुआ, डॉ परमान सिंह, डॉ पुरुषोत्तम पाटील ,डॉ रेणु चौधरी, डॉ शमा, डॉ अरविंद रावत, डॉ अरविंद शुक्ल उपस्थित रहे। ❑

डॉ. विजय ढोरे को मिला राष्ट्रीय पुरस्कार

केंद्रीय हिंदी संस्थान, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार में कार्यरत डॉ. विजय ढोरे को ललित कला अकादमी, नई दिल्ली एवं संस्कृति मंत्रालय की ओर से राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किए जाने की घोषणा हुई है। इसकी घोषणा 64वीं राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी में केंद्रीय सांस्कृतिक एवं पर्यटन मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत द्वारा की गई। पुरस्कार का औपचारिक वितरण राष्ट्रपति भवन में इस माह के अंत में महामहिम राष्ट्रपति द्वारा किया जाएगा, जिसमें प्रमाणपत्र, ताम्रपत्र एवं दो लाख रुपये की राशि प्रदान की जाएगी। इस उपलब्धि पर संस्थान परिवार ने डॉ. ढोरे को बधाई दी। ❑

कार्यशालाएँ आयोजित

'राजस्थानी - लोकोक्ति - मुहावरे लोक शब्दकोश' कार्यशाला प्रो. उमापति दीक्षित सांध्यकालीन पाठ्यक्रम विभाग के विभागाध्यक्ष की अध्यक्षता में संपन्न हुई जिसमें बाह्य विशेषज्ञ के रूप में प्रो. आदित्य कुमार गुप्ता, (कोटा), श्री शिवदान सिंह, (उदयपुर), श्री देवकी दर्पण, (बूंदी), श्री योगीराज जी योगी, (कोटा), श्री विष्णु प्रसाद शर्मा 'हरिहर', (झालावाड़) शामिल थे। इस क्रम में 'भोजपुरी - हिंदी - अंग्रेजी त्रिभाषी लोक शब्दकोश' कार्यशाला प्रो. उमापति दीक्षित, विभागाध्यक्ष की अध्यक्षता में संपन हुई जिसमें बाह्य विशेषज्ञ के रूप में डॉ. ब्रजभूषण मिश्रा, (मुजफ्फरपुर), प्रो. उदय प्रकाश पाण्डेय, (वाराणसी), प्रो. जयकांत सिंह, (मुजफ्फरपुर), डॉ. अनिल कुमार प्रसाद, (पटना), श्री चन्देश्वर शर्मा परवाना, (गोरखपुर), श्री दिनेश पाण्डेय (पटना) शामिल थे। ❑

प्रेमचंद जयंती समारोह

संस्थान के अध्यापक शिक्षा विभाग द्वारा मुंशी प्रेमचंद जयंती समारोह का आयोजन अटल बिहारी वायपेयी अंतरराष्ट्रीय सभागार में किया गया। कार्यक्रम के संयोजक प्रो. चंद्रकांत कोठे (विभागाध्यक्ष) ने अतिथियों का स्वागत किया और कहा कि मुंशी प्रेमचंद जैसे महान साहित्यकार, की जयंती मनाने के पीछे उद्देश्य यह है कि उनके भारतीय समाज एवं संस्कृति से ओत-प्रोत विचारों से शिक्षक प्रशिक्षणार्थी परिचित हो सकें। मुख्य अतिथि प्रो. बीना शर्मा ने कहा कि साहित्यकार कालजयी होता है क्योंकि वह घटनाओं को मन की आँखों से देखता है। निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि साहित्यकारों/महापुरूषों के विचार केवल पढ़ने व बोलने के विषय नहीं हैं बल्कि जीवन में आत्मसात करने के विषय हैं। निदेशक ने अध्यक्षीय उद्बोधन के माध्यम से महाकवि तुलसीदास के जीवन की घटना से विद्यार्थियों को दृढ़ संकल्पित होने का संदेश भी दिया तथा शरतचंद और संत तुकाराम का भी स्मरण किया गया। इस सुअवसर पर निदेशक द्वारा प्रेमचंद कृत 'कफ़न' कहानी का अभिवाचन भी किया गया। संचालन डॉ. सरोज राय, धन्यवाद ज्ञापन डॉ. प्रणीता मिश्रा, द्वारा किया गया। ❑

हिंदी का वैश्विक परिदृश्य और रोजगार की संभावनाएँ

श्रीलंका से आए शिक्षकों के लिए आयोजित पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के अंतर्गत दिनांक 14 जुलाई 2025 को एक विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसका विषय था 'वैश्विक परिदृश्य में हिंदी में रोजगार की संभावनाएँ'। उक्त व्याख्यान हिंदी निदेशालय की सहायक निदेशक डॉक्टर नूतन पांडेय द्वारा दिया गया। डॉक्टर पांडेय ने हिंदी के अनुवाद टूल्स के विषय में बताते हुए गूगल ट्रांसलेट, माइक्रोसॉफ्ट ट्रांसलेटर, अमेजन ट्रांसलेट, अनुवादिनी, भाषिनी, यूट्यूब सबटाइटल्स के विषय में छात्रों को जानकारी प्रदान की।

इस व्याख्यान में अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. जोगेंद्र सिंह मीणा, डॉ. दीपा मणि बरुआ, डॉ. परमान सिंह, डॉ. पुरुषोत्तम पाटील, डॉ. रेणु चौधरी, डॉ. शमा, डॉ. अरविंद रावत, डॉ. अरविंद शुक्ल उपस्थित रहे।

अद्भुत है भारतीय ज्ञान परंपरा : डॉ. पाटील

श्रीलंका सरकार के अधीन सेवारत हिंदी शिक्षकों के लिए आयोजित होने वाले पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के अंतर्गत दिनांक 16 जुलाई 2025 को ज्ञान परंपरा के संदर्भ में एक विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया। विशिष्ट व्याख्यान हेतु महाराष्ट्र से आए डॉ. योगेश पाटील ने भारतीय ज्ञान परंपरा विषय पर विशेष व्याख्यान दिया। डॉ. पाटील ने बताया कि भारत की गुरु शिष्य परंपरा सबसे अधिक प्राचीन और अद्भुत है। यहाँ गुरु पिता तुल्य तथा शिष्य पुत्र समान होता है। भारत की ज्ञान प्रणाली में छात्र को केवल सफल ही नहीं अपितु समर्थ भी बनाया जाता है।

संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने भी भारतीय ज्ञान परंपरा विषय पर छात्रों का ज्ञानवर्धन किया उन्होंने छात्रों को बताया कि व्यक्ति में सभी मानवीय मूल्यों का विकास, नैतिकता, सदाचार, चरित्र निर्माण यह सभी गुण भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल है।

मैकाले की शिक्षा नीति ने इन्हीं सब मानवीय मूल्यों को नष्ट करने का प्रयास किया है। वर्तमान में नई शिक्षा नीति के अंतर्गत पुनः अपनी ज्ञान परंपरा संबंधी विषयों का समावेश किया जा रहा है जो आज के समय में छात्रों के लिए नितांत आवश्यक है। उन्होंने यह भी बताया कि वर्तमान परिदृश्य में छात्र के जीवन में बढ़ते तनाव, निराशा, लक्ष्यहीनता की भावना को ध्यान में रखते हुए अपनी भारतीय ज्ञान परंपरा को पुनः स्थापित करना परम आवश्यक हो जाता है। इस व्याख्यान में अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग के सभी विभागीय सदस्य तथा विभागाध्यक्ष उपस्थित रहे। ❑

संपादकीय

ज्ञान-विज्ञान की विरासत

प्रिय पाठकों,

सत्यम् शिवम् सुंदरम्। सत्य से और सुंदर से आच्छादित 'शिव' तत्व को भारतीय मनीषा सावन (जल) का पर्याय मानती है। ज्येष्ठ-आषाढ़ के आतप दारूण से हलकान सृष्टि सावन (आंग्ल कैलेंडर का जुलाई महीना) की सौगात पाकर खिल-खिल जाती है। कथा कहती है कि देवताओं ने इसी महीने में समुद्र मंथन का शुभारंभ किया था।

लंबे ग्रीष्मावकाश के बाद लगभग सुनसान पड़े शिक्षण संस्थानों में सत्रारंभ के साथ चहल-पहल की आमद होती है। सत्रारंभ शैक्षणिक एवं व्यक्तिगत विकास के लिए एक नया अवसर होता है,एक नई शुरुआत होती है, क्योंकि हम लक्ष्य निर्धारित करते हैं, गुरुओं की प्रेरणा से वर्ष भर उसका संधान करते हैं, नई चीज सीखने, कौशल विकसित करने, ज्ञान क्षमताओं को बढ़ाने और अपने भावी जीवन के सपनों को साकार करने की दिशा में सामंजस्यपूर्ण सचेत-समवेत प्रयास करते हैं। आशय है कि जिस तरह समुद्र मंथन से देवताओं ने विविध निधियाँ खोज ली थीं, उसी तरह सत्र के दौरान गुरु कुम्हार अपने अनुभव और विचार से शिष्यों के खोट (शंकाओं) को दूर करते हुए अपनी ज्ञान ज्योति का सहारा देकर एक अधिक बेहतर मनुष्य (जो परिवार, समाज और राष्ट्र के लिए निधितुल्य हो) को गढ़ने का सार्थक प्रयास करते हैं।

संस्थान के मुख्यालय, आगरा सहित सभी क्षेत्रीय केंद्रों पर विभिन्न साहित्यिक-शैक्षणिक कार्यक्रम हुए। नवीनीकरण, भाषा संचेतना शिविर का सफल आयोजन हुआ। संस्थान के सभागार में साहित्यिक पुरखे मुंशी प्रेमचंद की जन्म जयंती मनाई गई वहीं भारतीय लोकतंत्र पर काले धब्बे की तरह चस्पा, आपातकाल के 50 वें पड़ाव पर वाद विवाद-प्रतियोगिता आयोजित हुई। भारतीय ज्ञान परंपरा को जानने समझने के लिए देश के कोने-कोने से अध्ययन यात्रा पर आए छात्रों ने विशेषज्ञों से अपनी बातें साझा की। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में पाणिनी व्याख्यान माला के तहत 'भारत की भाषिक नीति और हिंदी' विषय पर गंभीर विमर्श हुआ।

उल्लेखनीय है कि यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में विकसित राष्ट्र मिशन 2047 के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक क्रांतिकारी कदम है। संयोग है कि जुलाई महीने में नई शिक्षा नीति के 5 साल पूरे हुए। नई शिक्षा नीति में भारतीय भाषाओं और भारतीय ज्ञान परंपरा को विशेष महत्व दिया गया है।

प्राचीन काल से लेकर आज तक भारत की बौद्धिक परंपराओं में जिज्ञासा, परीक्षण और अन्वेषण की भावना रही है। सदियों से भारतीय विज्ञान, वैज्ञानिक और दार्शनिक नवाचार के मामले में आगे रहे हैं और मानव ज्ञान तथा समझ की सीमाओं से आगे बढ़ते रहे हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा की गहराई का उदाहरण प्राचीन कथाओं और ग्रंथों में सहज मिलता है। ब्रह्मवैवर्त पुराण की रेवती कथा हो या वेद-उपनिषदों के दार्शनिक सूत्र ये सभी समय, विज्ञान और जीवन-दृष्टि की गहन समझ दर्शाते हैं। गणित और खगोल शास्त्र के मर्मज्ञ आर्यभट्ट ने नया क्रांतिकारी विचार प्रस्तुत किया कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है जो उनके समय से बहुत आगे की अवधारणा है। पाणिनि ने 'अष्टाध्यायी' विकसित की जो भाषाविज्ञान पर एक व्यापक ग्रंथ है और अपनी गहराई तथा परिष्कार में अद्वितीय है। पतंजलि का योग सूत्र शारीरिक मानसिक और आध्यात्मिक कल्याण के लिए दुनिया में करोड़ों लोगों का मार्गदर्शन कर रहा है। चरक संहिता और सुश्रुत संहिता शरीर और औषधि विज्ञान के लिए बहुमूल्य ग्रंथ है। भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत नवाचार और उत्कृष्ट के उदाहरणों से भरी पड़ी है। प्राचीन भारतीयों के जटिल धातु विज्ञान से लेकर जंतर मंतर वेधशालाओं के परिष्कृत खगोल विज्ञान, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित की दुनिया में भारत के योगदान को नकारा नहीं जा सकता।

आज, जब दुनिया तीव्र गति से बदल रही है, भारत के लिए आवश्यक है कि वह अपनी बौद्धिक विरासत को न केवल संरक्षित करे, बल्कि उसे समकालीन आवश्यकताओं के अनुरूप ढाले। इसी उद्देश्य से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा, और भारतीय भाषाओं को शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाने पर विशेष बल दिया गया है। नीति का उद्देश्य केवल आधुनिक विज्ञान और तकनीक को बढ़ावा देना ही नहीं, बल्कि भारत की प्राचीन बौद्धिक विरासत, सांस्कृतिक मूल्यों और पारंपरिक ज्ञान को भी मुख्यधारा में लाना भी है। इसमें वेद, उपनिषद, पुराण, ज्योतिष, गणित, खगोल विज्ञान, चिकित्सा, योग, कला, शिल्प, भाषाशास्त्र, पर्यावरणीय ज्ञान और ग्राम्य जीवन से जुड़ी लोक परंपराओं जैसे क्षेत्रों के अध्ययन और अंतर-अनुशासनात्मक शोध को प्रोत्साहित करने की बात है।

सरकार, शैक्षणिक संस्थानों और स्थानीय समुदायों का समन्वित प्रयास ही इस भारतीय ज्ञान परंपरा के इस पुनरुद्धार को स्थायी और सर्वजनहितकारी बनाएगा। समुद्र मंथन का अमृत तभी सार्थक है जब वह सबके जीवन को समृद्ध करें और यही राष्ट्रीय शिक्षा नीति का परम उद्देश्य भी है। केंद्रीय हिंदी संस्थान इस दिशा में सतत प्रयत्नशील है।

प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी
निदेशक

अध्ययन यात्राओं से छात्रों को मिलती है जीवन दृष्टि: निदेशक

मुख्यालय आगरा में भारतभर से आए छात्रों की अध्ययन यात्रा संपन्न....

केंद्रीय हिंदी निदेशालय, उच्चतर शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली एवं केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित तीन दिवसीय छात्र अध्ययन यात्रा का शुभारंभ दिनांक 8 जुलाई 2025 को केंद्रीय हिंदी संस्थान के अटल बिहारी वाजपेई अंतरराष्ट्रीय सभागार में हुआ।

केंद्रीय हिंदी संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में दैनिक जागरण के संपादक श्री अवधेश माहेश्वरी सहित मंच पर केंद्रीय हिंदी संस्थान के शैक्षिक समन्वयक प्रो. हरिशंकर, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली के विस्तार विभाग की उपनिदेशक डॉ. किरण झा एवं संस्थान के अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग के विभाग अध्यक्ष डॉ. जोगेंद्र सिंह मीणा उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का उद्‌घाटन अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन एवं माता सरस्वती की प्रतिमा पर पुष्प अर्पण कर हुआ। केंद्रीय हिंदी निदेशालय, प्रतिनिधि सुनील कुमार ने निदेशालय द्वारा चलाई जा रही छात्र अध्ययन यात्रा के बारे में विस्तार से बताया। संस्थान के शैक्षिक समन्वयक प्रो. हरिशंकर ने छात्रों का संस्थान की ओर से स्वागत किया एवं उनकी इस महत्वपूर्ण अध्ययन यात्रा हेतु सभी छात्रों को शुभकामनाएँ दी।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे अवधेश माहेश्वरी ने कहा कि शैक्षिक अध्ययन यात्रा विद्यार्थियों के जीवन का एक महत्वपूर्ण पड़ाव होता है जो उनके भविष्य के अध्ययन की दिशा को निर्धारित करने का भी काम करता है। साथ ही ऐसी छात्र अध्ययन यात्राएं छात्रों को भारत को सांस्कृतिक और सामाजिक रूप से समझने का भी एक अवसर प्रदान करती हैं। इन छात्र अध्ययन यात्राओं से राष्ट्रीय एकात्मता को भी बढ़ावा मिलता है। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में केंद्रीय हिंदी संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने इस छात्र अध्ययन यात्रा को छात्रों की प्रगति में मील का पत्थर बताया और उन्होंने कहा कि इस प्रकार की छात्र अध्ययन यात्राएँ बच्चों के ज्ञान को विकसित करने का कार्य करती हैं, साथ ही विद्यार्थियों को एक नई जीवन दृष्टि मिलती है। इन छात्र अध्ययन यात्राओं का उद्देश्य न केवल विद्यार्थियों को ज्ञान के नए-नए पहलुओं से परिचित कराना है। जिसके लिए संस्थान देश विदेश में जाना जाता है। भारत के सुदूर दक्षिण से लेकर उत्तर तक ज्ञानार्जन के लिए आने वाले इन हिंदीतर भाषी राज्यों के हिंदी पढ़ने वाले छात्रों के ज्ञान को और उनकी क्षमताओं को नई दिशा और नई ऊर्जा देने का कार्य यह छात्र अध्ययन यात्रा करती है। कार्यक्रम का संचालन डॉ. पुरुषोत्तम पाटील तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ.परमान सिंह ने किया। अंत में राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

तीन दिवसीय छात्र अध्ययन यात्रा का समापन दिनांक 10 जुलाई 2025 को हुआ। केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली द्वारा हिंदीतर राज्यों के विद्यार्थियों के लिए चलाई जा रही इस तीन दिवसीय 'छात्र अध्ययन यात्रा' के अंतर्गत केरल, कर्नाटक, महाराष्ट्र सहित अन्य राज्यों के लगभग 40 विद्यार्थियों ने इसमें हिस्सा लिया।

इस यात्रा के दौरान विद्यार्थियों को हिंदी के कई विद्वानों के साथ चर्चा परिचर्चा एवं संवाद साधने का अवसर मिला जिनमें संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, पूर्व निदेशक प्रो. रामवीर सिंह, संस्थान की पूर्व कार्यकारी निदेशक प्रो. बीना शर्मा, आर. बी.एस. महाविद्यालय, आगरा के हिंदी विभाग के सहायक प्रो. डॉ. शौर्यजीत सिंह प्रमुख थे। अध्ययन के अलावा विद्यार्थियों ने आगरा एवं परिक्षेत्र के ऐतिहासिक एवं साहित्यिक महत्व के स्थलों का भ्रमण कर जानकारी भी प्राप्त की।

समापन सत्र की अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी संस्थान के पूर्व निदेशक प्रो. रामवीर सिंह ने की। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में मंच पर केंद्रीय हिंदी संस्थान के कुलसचिव डॉ. अंकुश औंधकर, शैक्षिक समन्वयक प्रो. हरिशंकर, अध्यापक शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. चंद्रकांत कोठे एवं अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. जोगेंद्र सिंह मीणा, यात्रा के संयोजक डॉ. पुरुषोत्तम पाटील तथा केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली के विस्तार विभाग की सह निदेशक डॉ. किरण झा, सहायक अनुसंधान अधिकारी श्री सुनील कुमार आदि उपस्थित थे। डॉ. किरण झा, प्रो. हरीशंकर तथा कुलसचिव डॉ. औंधकर ने भी अपनी बात रखी तथा छात्र अध्ययन यात्रा के महत्व को रेखांकित किया।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में केंद्रीय हिंदी संस्थान के पूर्व निदेशक प्रो. रामवीर सिंह ने कहा कि इस संस्थान की स्थापना हिंदीतर राज्यों के विद्यार्थियों के लिए ही की गई है और सच्चे अर्थों में वहां के विद्यार्थी ही इसके सच्चे उत्तराधिकारी हैं। आज सुदूर दक्षिण के केरल प्रांत में हिंदी पढ़ रहे लगभग 20 विद्यार्थी इस अध्ययन यात्रा दल में सम्मिलित हुए हैं जो संस्थान की स्थापना के महत उद्देश्य की फलश्रुति ही मानी जा सकती है।

कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतिभागी विद्यार्थियों को मंचस्थ अतिथियों के हाथों प्रमाण पत्र वितरित किए गए। कार्यक्रम का संचालन तथा धन्यवाद ज्ञापन इस यात्रा के संयोजक डॉ. पुरुषोत्तम पाटील ने किया। ❑

वरिष्ठ वर्ग में प्रतीक्षा छेत्री तो कनिष्ठ वर्ग में केसिहोंग ने मारी बाजी

शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार एवं संस्थान प्रशासन के आदेशानुसार अध्यापक शिक्षा विभाग द्वारा आपालकाल की 50वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन संस्थान के अटल बिहारी वाजपेयी अंतरराष्ट्रीय सभागार में आपातकाल की 50 वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन (30 जुलाई, 2025) को किया गया। इसमें वरिष्ठ वर्ग की प्रतियोगिता का विषय 'आपातकाल में शिक्षा व्यवस्था पर नियंत्रण उचित था' तथा कनिष्ठ वर्ग की प्रतियोगिता का विषय 'भारतीय आपातकाल लोकतंत्र के लिए आवश्यक था' रखा गया। इस प्रतियोगिता में वरिष्ठ वर्ग में 22 तथा कनिष्ठ वर्ग में 07 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

वाद-विवाद प्रतियोगिता कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. चंद्रकांत कोठे, विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा विभाग ने की। प्रतियोगिता के निर्णायक के रूप में डॉ. मीनाक्षी दुबे, विभागाध्यक्ष, पूर्वोत्तर सामग्री निर्माण विभाग और डॉ. अरिमर्दन त्रिपाठी, विभागाध्यक्ष, अनुसंधान एवं भाषा विकास विभाग रहे। प्रतियोगिता के परिणामों की घोषणा प्रो. चंद्रकांत कोठे, विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा विभाग ने की जिसमें वरिष्ठ वर्ग में प्रथम स्थान प्रतीक्षा छेत्री, द्वितीय स्थान लिली साहू एवं मगुसिर पाणिग्रही और तृतीय स्थान प्रियंका पाणिग्रही ने प्राप्त किया। कनिष्ठ वर्ग में प्रथम स्थान पर केसिहोंग तथा द्वितीय स्थान पर दिकेबे होय रहे। ❑

सेवानिवृत्त

मुख्यालय आगरा के प्रकाशन विभाग में पदस्थ श्री राकेश कुमार शर्मा, प्रकाशन सहायक अपने 37 वर्ष के लंबे सेवाकाल के उपरांत दिनांक 31.07.2025 को संस्थान से सेवानिवृत्त हुए। संस्थान आपके स्वस्थ दीर्घायु जीवन की मंगलकामनाएँ करता है। ❑

दिल्ली केंद्र

रुसी दूतावास का केंद्र-संदर्शन

केंद्रीय हिंदी संस्थान, दिल्ली केंद्र पर संचालित अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण पाठ्यक्रम शैक्षिक सत्र 2025-26 के लिए दिनांक 28/07/2025 को रुसी दूतावास के दो अधिकारी श्री इवान रामेनेव (फर्स्ट सेक्रेट्री एम्बेसी ऑफ द रशियन फेडरेशन) एवं सुश्री एकट्रीना

(हैड ऑफ रशियन लैंग्वेज एजूकेशन सेंटर) में केंद्रीय हिंदी संस्थान, दिल्ली केंद्र का संदर्शन किया एवं केंद्र पर संचालित पाठ्यक्रमों के संबंध में जानकारी प्राप्त की। ❑

शिक्षण में हो विभिन्न कौशल का प्रयोग

केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र द्वारा महाराष्ट्र राज्य के लातूर जिले के माध्यमिक हिंदी अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए '486 वें नवीकरण पाठ्यक्रम' का आयोजन दिनांक 07.07.2025 से 19.07.2025 तक किया गया, जिसका उद्घाटन समारोह दि. 07.07.2025 को संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू विश्वविद्यालय, हैदराबाद के परामर्शी प्रो. ऋषभ देव शर्मा, विशिष्ट अतिथि के रूप में सुप्रसिद्ध तेलुगु साहित्यकार एवं दिगंबर कवि डॉ. निखिलेश्वर उपस्थित रहे।

इस अवसर पर साहित्यकार एवं माइक्रोसॉफ्ट अभियंता, हैदराबाद के डॉ. प्रवीण प्रणव, पाठ्यक्रम संयोजक केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. गंगाधर वानोडे एवं पाठ्यक्रम प्रभारी डॉ. फत्ताराम नायक, डॉ. दीपेश व्यास, अतिथि प्रवक्ता एवं डॉ. एस. राधा उपस्थित थीं। इस नवीकरण पाठ्यक्रम में कुल 42 (महिला-15, पुरुष-27) प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

इस पाठ्यक्रम के दौरान प्रो. गंगाधर वानोडे डॉ. फत्ताराम नायक, डॉ. दीपेश व्यास, डॉ. राजीव कुमार सिंह अध्यापन कार्य किया। डॉ. प्रवीण प्रणव ने हिंदी शिक्षण तथा डॉ. एफ.एम. सलीम ने हिंदी में रोजगार की संभावनाएँ विषय पर विशेष व्याख्यान दिया।

486वाँ नवीकरण पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम का समापन समारोह 19 जुलाई 2025 को संपन्न हुआ। समापन समारोह कार्यक्रम की अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने की। मुख्य अतिथि के रूप में केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा के शासी परिषद सरस्य प्रो. आर. एस. सर्राजु एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद की पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष, प्रो. शुभदा वांजपे उपस्थित थीं। इस अवसर पर केंद्र पर पधारे पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग, मेघालय के सहायक प्रो. डॉ. साईनाथ विठ्ठल चपले, पाठ्यक्रम संयोजक प्रो. गंगाधर वानोडे एवं पाठ्यक्रम प्रभारी डॉ. फत्ताराम नायक एवं डॉ. दीपेश व्यास मंच पर उपस्थित रहे।

मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. आर.एस. सर्राजु विशिष्ट अतिथि प्रो. शुभदा वांजपे के साथ-साथ डॉ. साईनाथ चपले डॉ. फत्ताराम नायक डॉ. दीपेश व्यास ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

पाठ्यक्रम संयोजक प्रो. वानोडे ने प्रशिक्षार्थियों से कहा कि आप यहाँ से जो भी ज्ञान लेकर जा रहे हैं। वह अपने विद्यार्थियों को देकर ज्ञान का प्रचार-प्रसार करेंगे। यह तभी संभव है जब आप लगातार अभ्यासरत रहेंगे।

समारोह की अध्यक्षता कर रहे केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने कहा कि ईश्वर ने हमें अध्ययन और अध्यापन का कार्य दिया है। जिसे हमें अद्यतन होकर करना चाहिए।

इंटरनेट के इस युग में ए आई जैसे मोबाइल एप के माध्यम से विद्यार्थी स्वयं ज्ञान अर्जित कर लेता है। इसलिए शिक्षक को भी नए-नए कौशलों के माध्यम से शिक्षण कार्य करना होगा।

इसके लिए अध्यापकों को स्वयं 64 कलाओं और 9 रसों में पारंगत होना होगा। कार्यक्रम का संचालन महाजन बलवंत चंद्रकांत द्वारा किया गया। आभार एवं धन्यवाद ज्ञापन श्री सरफराज देशमुख द्वारा प्रस्तुत किया गया।

अंत में राष्ट्रगान से कार्यक्रम का समापन हुआ। ❑

प्रो. गंगाधर वानोडे ने की सहभागिता

दिनांक 28 जुलाई, 2025 को मौलाना आजाद नेशनल मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय गाचीबोवली, हैदराबाद द्वारा आयोजित हिंदी कार्यक्रमों (यूजी/पीजी) की स्व-शिक्षण सामग्री (एसएलएम) के संपादकीय बोर्ड की बैठक की गई जिसमें केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. गंगाधर वानोडे ने बोर्ड के सम्मानित सदस्य के रूप में भाग लिया।

इस अवसर पर उपस्थित सभी महानुभावों ने प्रो. गंगाधर वानोडे को सेवानिवृत्ति की बधाई तथा मंगलकामनाएँ प्रेषित की। ❑

प्रो. वानोडे सेवानिवृत्त

केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. गंगाधर वानोडे की सेवानिवृत्त के अवसर पर विदाई समारोह का आयोजन 31 जुलाई, 2025 को हैदराबाद केंद्र पर किया गया। इस अवसर पर नए क्षेत्रीय निदेशक डॉ. फत्ताराम नायक की अगुवाई में केंद्र के कर्मचारियों की ओर से प्रो. वानोडे को स्मृति चिन्ह भेंट किया गया।

केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के उपाध्यक्ष प्रो. सुरेंद्र दुबे ने अपने शुभकामना संदेश में कहा है कि वानोडे जी के कार्य और संस्थान के प्रति उनका समर्पण हमेशा याद किया जाएगा। प्रो. दुबे ने उनकी कार्य कुशलता एवं आगामी भविष्य की शुभकामनाएँ प्रेषित की।

संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने डॉ. वानोडे द्वारा संस्थान के प्रति किए गए कार्यों की सराहना की तथा उनके आगामी जीवन के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित की। ❑

समन्वय दक्षिण का लोकार्पण

दिनांक 11 जुलाई, 2025 को जीएमसी बालायोगी इनडोर स्टेडियम, हैदराबाद में आयोजित 'राजभाषा विभाग के स्वर्ण जयंती' समारोह में केंद्रीय हिंदी संस्थान हैदराबाद केंद्र से प्रकाशित यूजीसी केयर सूची में सम्मिलित त्रैमासिक शोध पत्रिका 'समन्वय दक्षिण के जनवरी-मार्च, 2025 अंक का लोकार्पण मुख्य अतिथि माननीय केंद्रीय कोयला एवं खनन मंत्री जी. किशन रेड्डी एवं मंचासीन अतिथि तथा क्षेत्रीय निदेशक प्रो. गंगाधर वानोडे के कर कमलों द्वारा संपन्न हुआ।

यह अंक साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित तेलुगु साहित्यकार दिगंबर कवि श्री निखिलेश्वर के साहित्य पर केंद्रित है। ❑

कार्यभार ग्रहण

दिनांक 31.07.2025 को डॉ. फत्ताराम नायक ने केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। ❑

शिलांग केंद्र

190 वाँ हिंदी शिक्षक नवीकरण पाठ्यक्रम

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा (शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार) के क्षेत्रीय केंद्र, शिलांग द्वारा मेघालय राज्य के पश्चिम गारो हिल्स एवं दक्षिण-पश्चिम गारो हिल्स जिलों के हिंदी शिक्षकों के लिए 190 वाँ हिंदी शिक्षक नवीकरण पाठ्यक्रम दिनांक 14.07.2025 से 26.07.2025 तक तुरा, मेघालय में आयोजित किया गया। इस पाठ्यक्रम के समापन समारोह में शिलांग केंद्र के निदेशक एवं पाठ्यक्रम संयोजक प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय, सहायक आचार्य डॉ. मयंक एवं अतिथि अध्यापक श्री आकाश कुमार उपस्थित थे।

पाठ्यक्रम के समापन समारोह के अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय ने शिक्षकों से उनके शिक्षण-धर्म का निर्वाह करने का आग्रह किया। उन्होंने शिक्षक प्रतिभागियों को पाठ्यक्रम में नवीन एवं अधुनातन ज्ञान प्राप्त करने एवं इसे सफलतापूर्वक पूर्ण करने के लिए बधाई दी। समापन समारोह में डॉ. मयंक

ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में प्रतिभागियों ने नवीकरण पाठ्यक्रम हेतु प्रतिक्रिया व्यक्त की तथा हिंदी, हाजोंग और गारो गीत प्रस्तुत किए। इसके उपरांत प्रतिभागियों प्रमाण-पत्र दिए गए।

साथ ही पर-परीक्षण में प्रथम, द्वितीय, एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को भी उत्साहवर्धन हेतु प्रमाण-पत्र दिए गए। कार्यक्रम का संचालन प्रतिभागी अध्यापिका श्रीमती सिसिलिया डी. मारक ने किया एवं धन्यवाद ज्ञापन प्रतिभागी अध्यापक श्री विनोद कुमार सिंह ने किया।

इससे पूर्व पाठ्यक्रम के उद्घाटन समारोह में अध्यक्ष के रूप में केंद्रीय हिंदी संस्थान, शिलांग केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय, मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. हितेन्द्र मिश्र, विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, विशिष्ट अतिथि के रूप में केंद्रीय हिंदी संस्थान के कुलसचिव डॉ. अंकुश औंधकर ऑनलाइन माध्यम से उपस्थित थे। प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय ने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि शिक्षक का देश एवं समाज के निर्माण एवं विकास में विशेष स्थान होता है। उन्होंने सभी प्रतिभागियों को सक्रिय रूप से प्रतिभागिता करके नवीकरण पाठ्यक्रम का लाभ उठाने हेतु शुभकामनाएं दीं।

मुख्य अतिथि प्रो. हितेन्द्र मिश्र विशिष्ट अतिथि डॉ. अंकुश औंधकर ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन अतिथि अध्यापक श्री आकाश कुमार ने एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. मयंक ने किया।

अंत में राष्ट्रगान के साथ उद्घाटन कार्यक्रम समाप्त हुआ। ❑

भाषाएँ संस्कृति की वाहक: प्रो. सुरेंद्र दुबे

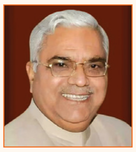

केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा के उपाध्यक्ष प्रो. सुरेंद्र दुबे ने कहा कि भारतीय संस्कृति पूरे विश्व में अद्वितीय है। इसके विभिन्न कारणों में से एक महत्वपूर्ण कारण भाषा है। सभी भारतीय भाषाओं का लक्ष्य एक ही है जो इसकी संस्कृति में प्रकट होती हैऔर इसकी संस्कृतियों की झलक स्थानीय लोक साहित्य में विशेषकर-लोककथा,लोकोक्तियों एवं कहावतों में दिखाई पड़ती है। इसलिए हमें स्थानीय

शेष पृष्ठ 7 पर

अहमदाबाद केंद्र

हिंदी भाषा संचेतना शिविर आयोजित

केंद्री हिंदी संस्थान आगरा के अहमदाबाद केंद्र द्वारा 15 से 28 जुलाई 2025 तक 'वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सूरत के परिसर में तुलनात्मक साहित्य विभाग के अंतर्गत 'हिंदी भाषा संचेतना शिविर' का आयोजन किया गया। इस 'हिंदी भाषा संचेतना शिविर' में तुलनात्मक साहित्य विभाग सहित कई अन्य विभागों के 78 स्नात्कोत्तर (एम.ए.) के छात्रों को निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

दिनांक 15 जुलाई 2025 को शिविर का विधिवत उद्घाटन हुआ जिसमें प्रो. किशोर सिंह एन. चावड़ा, कुलपति, वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सूरत, मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित रहे। इस अवसर पर तुलनात्मक साहित्य विभाग के अध्यक्ष डॉ. मुकेश वसावा, एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के अध्यापक डॉ. ज्योति सिंह, डॉ. अनिल पी. गामीत, डॉ. शैलेष झाला. डॉ. वैशाली बेन, डॉ. कल्पना परमार, डॉ. अर्चना पटेल, डॉ. निर्मला पटेल, डॉ. शुक्ल वैभव, मनीष, डॉ. दिनेश चौहान, आदि अन्य शिक्षक गण उपस्थित रह कर कार्यकम की गरिमा बढ़ाई।

क्षेत्रीय निदेशक डॉ. सुनील कुमार ने पाठ्यक्रम का परिचय दिया और तुलनात्मक साहित्य विभाग के अध्यक्ष डॉ. मुकेश वसावा ने मंच से अपना प्रासंगिक वक्तव्य रखा। कार्यक्रम अध्यक्ष के रूप में प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी निदेशक केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ने ऑनलाईन संबोधन प्रदान कर प्रतिभागियों को प्रोत्साहित किया और 'हिंदी भाषा संचेताना शिविर' प्रशिक्षण पर विस्तार से प्रकाश डाला। डॉ. निर्मला पटेल, ने मंच संचालन किया और डॉ. वैभव शुक्ल ने आभार व्यक्त किया।

निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार शिविर में डॉ. सुनील कुमार, डॉ. ज्योति सिंह, डॉ. शैलेष भाई झाला, डॉ. अनिल पी. गामीत, द्वारा विभिन्न विषयों पर अध्यापन कार्य किया गया। दिनांक 28 जुलाई 205 को शिविर के समापन समारोह में डॉ. रमेशदान गढ़वी, कुलसचिव, वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सूरत, को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। प्रो. नरेश शुक्ल अध्यक्ष गुजराती विभाग, उपस्थित रहे।

डॉ. मुकेश वसावा, अध्यक्ष तुलनात्मक साहित्य विभाग डॉ. ज्योति सिंह हिंदी विभाग मंच पर उपस्थित रहे। डॉ. अनिल पी. गामीत, डॉ. शैलेष झाला. डॉ. वैशाली बेन, डॉ. कल्पना परमार, डॉ. अर्चना पटेल, डॉ. निर्मला पटेल, डॉ. शुक्ल वैभव, मनीष, डॉ. दिनेश चौहान, आदि अन्य शिक्षकों ने उपस्थित रह कर कार्यकम की गरिमा बढ़ाई। कार्यक्रम के समापन सत्र में प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी निदेशक केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ने अध्यक्ष के रूप में ऑनलाईन जुड़कर प्रतिभागियों मे नई उर्जा का संचार किया और भावी शैक्षिक जीवन का मार्गदर्शन करते हुए 'हिंदी भाषा संचेताना शिविर' प्रशिक्षण की उपयोगिता पर विस्तार से प्रकाश डाला। मंच का संचालन छात्रों ने किया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. निर्मला पटेल द्वारा किया गया। ❑

प्रो. पाण्डेय का मुख्य निर्णायक के रूप में आमंत्रण

संस्थान के शिलांग केंद्र के निदेशक प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय को आर्मी पब्लिक स्कूल, शिलांग के डेविड हॉल में 8 जुलाई 2025 को वाद-प्रतिवाद प्रतियोगिता विषय : भारत को सोशल मीडिया पर नियंत्रण बढ़ाना चाहिए : पक्ष एवं विपक्ष में मुख्य निर्णायक की भूमिका निभाई। प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय ने अपने वक्तव्य में बच्चों से शैक्षिक गतिविधियों के साथ-साथ अन्य गतिविधियों में भी सक्रिय रूप से सहभाग करने का सुझाव दिया। कार्यक्रम के अंत में उन्होंने प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं भविष्य के लिए शुभकामनाएँ दी। ❑

विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित

केंद्रीय हिंदी संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र शिलांग के निदेशक प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय को डॉ. ए. पी.जे. अब्दुल कलाम फाउंडेशन द्वारा पूर्व राष्ट्रपति डॉ. कलाम की 10वीं पुण्यतिथि पर आयोजित सेमिनार में विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित एवं सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का आयोजन 27 जुलाई 2025 को उ सोसो थाम ऑडिटोरियम, शिलांग में किया गया।

इस कार्यक्रम में प्रो. पाण्डेय ने अपने वक्तव्य में भारत रत्न डॉ. ए. पी.जे. अब्दुल कलाम के जीवन-आदर्शों से लोगों को प्रेरित होने का आग्रह किया। ❑

लड़कों की तुलना में हिंदी सीखने की लड़कियों में ललक

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के गुवाहाटी क्षेत्रीय केंद्र द्वारा असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी के स्नातक स्तर के छात्रों के लिए गुवाहाटी क्षेत्रीय केंद्र पर दिनांक 22 जुलाई से 31 जुलाई, 2025 तक 'हिंदी भाषा संचेतना शिविर पाठ्यक्रम' का सफल आयोजन किया गया। इस शिविर का उद्देश्य छात्रों में हिंदी भाषा के प्रति चेतना जागृत करना एवं उन्हें भाषा-प्रयोग की व्यावहारिक समझ प्रदान करना था।

शिविर का संयोजन एवं अध्यापन कार्य डॉ. चंद्रशेखर चौबे, क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, गुवाहाटी केंद्र के कुशल मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। शिविर में द्वितीय प्रमुख शिक्षक के रूप में श्री मनोज कुमार श्रीवास्तव, प्रवक्ता, आर्य विद्यापीठ महाविद्यालय, गुवाहाटी तथा शिक्षिका यासना बोरा को आमंत्रित किया गया।

दस दिवसीय इस शिविर में व्यावहारिक भाषा प्रयोग, व्याकरण संबंधी सामान्य त्रुटियाँ, शिक्षा एवं संप्रेषण के विविध आयामों पर विशेष ध्यान दिया गया। छात्रों ने समूह कार्य, भाषण, लेखन-अभ्यास एवं संवाद-सत्रों के माध्यम से अपनी भाषा समझ और अभिव्यक्ति क्षमता को सशक्त किया।

हिंदी भाषा संचेतना शिविर पाठ्यक्रम का आयोजन

शिविर के अंतिम दिन 31 जुलाई, 2025 को अपराह्न 12:30 बजे से समापन समारोह एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में कॉटन विश्वविद्यालय की प्रवक्ता डॉ. परिस्मिता बोरदोलोई को सादर आमंत्रित किया गया। डॉ. यासना बोरा ने मुख्य अतिथि का स्वागत फुलाम गमछा से किया। क्षेत्रीय निदेशक डॉ. चंद्रशेखर चौबे द्वारा स्वागत वक्तव्य दिया गया। तत्पश्चात दस दिनों तक चले इस हिंदी भाषा संचेतना शिविर की समग्र गतिविधियों से संबंधित विस्तृत रिपोर्ट प्रतिभागी छात्रा भायाश्री द्वारा तैयार किया गया एवं कार्यक्रम में इनके द्वारा रिपोर्ट की प्रस्तुति भी की गई। पांच प्रतिभागी छात्राओं- रुबि बरुआ, हिमाश्री तालुकदार, प्रियंका कोवर,अनिन्दिता देवी तथा अमृता शर्मा ने दस दिनों तक चले प्रशिक्षण शिविर से संबंधित अपना-अपना अनुभव प्रस्तुत किया।

मुख्य अतिथि डॉ. परिस्मिता बोरदोलोई ने विद्यार्थियों को प्रेरक शब्दों से संबोधित किया और गोस्वामी तुलसीदास एवं प्रेमचंद की जन्म जयंती के अवसर पर दोनों महान विभूतियों के साहित्यिक-सामाजिक अवदान पर विस्तृत विचार प्रस्तुत किया साथ ही हिंदी भाषा के महत्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर प्रतिभागी छात्राओं -अस्मिता कलिता, रिमली तालुकदार,कृष्णा छेत्री, हियाश्री महंत तथा रिमझिम हाजरिकाने स्वरचित कविताओं और हिंदी गीतों की सुंदर प्रस्तुतियाँ दीं, जिससे कार्यक्रम का वातावरण उत्साह और भावनात्मक ऊर्जा से भर उठा। कार्यक्रम के अंत में कक्षा में नियमित रूप से उपस्थित 44 प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए जिनमें 42 छात्राएँ एवं दो छात्र थे।

साथ ही, हिंदी भाषा और साहित्य से संबंधित पुस्तकों का वितरण भी किया गया, ताकि छात्र आगे भी स्वाध्याय द्वारा अपनी भाषा दक्षता को विकसित कर सकें। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ किया गया। प्रतिभागी छात्रा आत्रेयी कलिता एवं राखी कुमारी शर्मा द्वारा समापन समारोह का सुन्दर संचालन किया गया। ❑

पृष्ठ 6 का शेष

लोक-साहित्य में विशेष रुचि दिखानी चाहिए। उक्त बातें उपाध्यक्ष प्रो. सुरेंद्र दुबे ने केंद्रीय हिंदी संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र शिलांग द्वारा दक्षिण-पश्चिम खासी हिल्स जिले के स्कूल हिंदी शिक्षकों के लिए आयोजित 189वें नवीकरण पाठ्यक्रम के समापन समारोह में कही। उन्होंने न केवल पूर्वोत्तर की भाषा एवं उसके साहित्य को संकलित करने का प्रस्ताव रखा बल्कि यहाँ कार्यरत विभिन्न प्रदेश के लोगों से स्थानीय भाषाओं को सीखने का आग्रह भी किया।

189वें नवीकरण पाठ्यक्रम के समापन समारोह प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय ने उपाध्यक्ष प्रो. सुरेंद्र दुबे केंद्रीय हिंदी संस्थान एवं अध्यक्षता कर रहे माननीय निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा का हृदय से स्वागत किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री अनिमेष तिवारी (आई.आर.एस.), राष्ट्रीय सीमा शुल्क अप्रत्यक्ष कर एवं नारकोटिक्स अकादमी एवं विशिष्ट अतिथि भारतीय प्रबंधन संस्थान, शिलांग के राजभाषा समिति के अध्यक्ष प्रो. अचिंत कुमार शर्मा, को अंगवस्त्र एवं मोमेंटों भेंट कर स्वागत किया गया। इस अवसर पर संस्थान के कुलसचिव डॉ. अंकुश औंधकर का भी स्वागत हुआ। डॉ. मयंक, सहायक आचार्य,केंद्रीय हिंदी संस्थान शिलांग केंद्र, अतिथि अध्यापक श्री आकाश कुमार एवं सुश्री लक्ष्मी रानी बोरा, शोधार्थी नेहू, शिलांग उपस्थित थे।

कार्यक्रम के अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने सभी प्रतिभागी शिक्षकों से इस नवीकरण से प्राप्त ज्ञान एवं कौशल का विस्तार अपने विद्यार्थियों में करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि हिंदी भाषा राष्ट्रीय स्तर का मंच उपलब्ध कराती है जिससे पूर्वोत्तर के विद्यार्थी एवं शिक्षक देश के विभिन्न हिस्सों से आसानी से जुड़ सकते हैं। हिंदी एक भाषा मात्र नहीं है बल्कि यह देश को एक करने का माध्यम है।

मुख्य अतिथि श्री अनिमेष तिवारी कुलसचिव डॉ. अंकुश औंधकर विशिष्ट अतिथि प्रो. अचिंत कुमार शर्मा ने भाषा और भारतीय स्मृति पर चर्चा की।

189वें नवीकरण पाठ्यक्रम का आयोजन दिनांक 23.06.2025 से 04.07.2025 तकमावकीरवात में किया गया। इसमें विभिन्न विद्यालयों से कुल 32 हिंदी शिक्षकों ने प्रतिभागिता की। नवीकरण पाठ्यक्रम में प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को विभिन्न विषयों का अध्यापन कार्य किया गया। प्रशिक्षण के बाद प्रशिक्षणार्थियों का पर-परीक्षण लिया गया एवं प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को विशेष प्रमाण-पत्र से पुरस्कृत किया गया। अंत में सभी प्रतिभागियों को पाठ्यक्रम का प्रमाण-पत्र एवं निवृत्ति पत्र दिया गया। कार्यक्रम का संचालन इबाशिशालिंग्डो एवं धन्यवाद ज्ञापन निशा क्रांलीसीएमलिए ने किया। ❑

पृष्ठ 1 का शेष

ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया तथा पिछले 5 वर्षों के दौरान हुई उल्लेखनीय प्रगति की समीक्षा भी की।

इस अवसर पर शिक्षा राज्य मंत्री और कौशल विकास एवं उद्यमिता राज्य मंत्री जयंत चौधरी शिक्षा और पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास राज्य मंत्री डॉक्टर सुकांत मजूमदार और 13 राज्यों, केंद्र शासित प्रदेशों के शिक्षा मंत्री भी उपस्थित रहे।

इस मौके पर उच्च शिक्षा विभाग के सचिव, स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग के सचिव, प्रमुख शिक्षाविद्, शिक्षा मंत्रालय के अंतर्गत स्वायत्त निकायों के प्रमुख, सीबीएसई, केवीएस, एसबीएस के क्षेत्रीय अधिकारी, उच्च शिक्षा संस्थानों के कुलपति, निदेशक अन्य मंत्रालयों के वरिष्ठ अधिकारी, राज्य शिक्षा सचिव, समग्र शिक्षा के राज्य परियोजना निदेशक, स्टार्टअप संस्थापक तथा स्कूली छात्र भी उपस्थित रहे। ❑

अर्थांतर

'हाथ जोड़ लेना' और 'हाथ जोड़ देना'

'जादूगर ने अपने दोनों टूटे हाथ जोड़ लिए' और 'जादूगर ने लड़के के दोनों टूटे हाथ जोड़ दिए' में 'हाथ जोड़ लिए' और 'हाथ जोड़ दिए' का अर्थ 'अभिधा' में है। इन उदाहरणों में लिए' और 'दिए' के अंतर से यह अर्थातर हो रहा है कि 'लिए' कर्ता के 'स्व' से जुड़ा है, जब कि 'दिए' उस के 'पर' (अन्य) से जुड़ा है।

'हाथ जोड़ लेना' और 'हाथ जोड़ देना' मुहावरों के अर्थ अभिधा से भिन्न होने ही हैं। ('हाथ जोड़ना' मुहावरे का अर्थ 'नमस्ते करना, अनुनय-विनय करना' है।)'आई.ए.एस. की परीक्षा में बुरी तरह फेल हो जाने के बाद उस ने हाथ जोड़ लिए कि आगे उस में कभी नहीं बैठूंगा' में 'हाथ जोड़ लिए' का अर्थ 'तोबा कर ली, ग़लती मान ली' है। कान पकड़ लिए का अर्थ और तगड़ा होता 'गलती मान-कर भविष्य में वैसा न करने की प्रतिज्ञा कर ली'।

'परीक्षाओं का संचालन करने के नाम पर प्रोफेसर ने कुलपति के हाथ जोड़ दिए (कुलपति के सामने हाथ जोड़ दिए कि मुझसे यह काम मत करवाइए।' अथवा, विशेषांक के लिए अग्रलेख लिखने की बात पर खबर नवीस ने संपादक के 'हाथ जोड़ लिए'। 'हाथ जोड़ दिए' का मतलब निकलता है 'क्षमा माँग ली, कार्य-विशेष से अलग रहने के लिए निवेदन कर दिया, हार मान ली'। कार्य-विशेष से बहुत दूर अर्थात् पूर्णतः असंबद्ध रहने के लिए कहा जाता है- दूर से ही हाथ जोड़ दिए (दूर से ही नमस्कार कर दिया)'।

इस 'दूर से हाथ जोड़ देने' के लिए व्यक्ति का सचमुच दूरी पर होना और नमस्कार करना ज़रूरी नहीं है। उदाहरण- 'डॉ. पराक्रम सिंह जेवर खरीदवाने के नाम पर अपनी श्रीमती जी के दूर से ही हाथ जोड़ देते है।'

प्रस्तुति : अनिल तिवारी

हिंदी में हैं रोज़गार की अपार संभावनाएँ : निदेशक

अनुसंधान एवं भाषा विकास विभाग द्वारा 'पाणिनि व्याख्यान माला' के तहत भारत की भाषिक नीति और हिंदी पर चर्चा

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के अटल बिहारी वाजपेयी सभागार में शुक्रवार, 25जुलाई 2025को 'पाणिनि व्याख्यान माला' का आयोजन किया गया। 'भारत की भाषिक नीति और हिंदी' विषय पर आयोजित इस विशिष्ट व्याख्यान में मूर्धन्य भाषाविद एवं साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता प्रो. उदयनारायण सिंह ने मुख्य वक्ता के रूप में अपने विचार साझा किए।

सायं 4:30बजे आरंभ हुए इस सत्र में प्रो. उदयनारायण सिंह ने हिंदी और भारत की भाषिक नीति के समक्ष मौजूद चुनौतियों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि किस प्रकार जॉर्ज ग्रियर्सन ने अपने भाषाई सर्वेक्षण में पूर्वोत्तर और मैसूर जैसे क्षेत्रों को छोड़ दिया, जिससे भाषाओं की संख्या कम आंकी गई, जबकि वास्तविकता यह है कि भारत में भाषाओं की संख्या कहीं अधिक है।

उन्होंने देश में भाषाई समस्याओं से उत्पन्न होने वाले राष्ट्रीय एकता के संभावित नुकसान के प्रति आगाह किया प्राचीन भारत में भाषाई संघर्ष के अभाव पर जोर देते हुए प्रो. सिंह ने कहा कि संस्कृत और पालि के बीच किसी संघर्ष के प्रमाण नहीं मिलते, तो आज यह स्थिति क्यों है?

उन्होंने इसके पीछे धैर्य और भाषिक कार्यों की कमी को प्रमुख कारण बताया। उन्होंने स्पष्ट किया कि आधुनिक भारत के संचालन में भाषाई समस्याओं का समाधान केवल सरकार के प्रयासों से संभव नहीं है बल्कि इसके लिए हम सभी को मिलकर प्रयास करने होंगे। प्रो. सिंह ने भारत में अनुवाद के माध्यम से भाषा संघर्ष को कम करने की संभावनाओं पर भी बात की। उन्होंने रामायण या महाभारत के अनुवादों में किसी मतभेद के न होने का उदाहरण देते हुए बताया कि ये ग्रंथ समाज पर आधारित होते हुए भी अनुवाद में कोई विवाद उत्पन्न नहीं करते। उन्होंने राजभाषा के प्रचार में अपेक्षित तेजी न आने को भी एक बड़ी समस्या बताया। इसके अतिरिक्त उन्होंने संविधान की आठवीं अनुसूची में भाषाओं को शामिल करने की समस्याओं पर भी प्रकाश डाला।

उन्होंने कहा कि भोजपुरी और राजस्थानी जैसी समृद्ध भाषाएँ होते हुए भी अनुसूची में नहीं आ पाई हैं और इसके कारकों को समझने की आवश्यकता है। प्रो. सिंह ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मातृभाषा के उपयोग पर भी चर्चा की और बहुसंख्यक तथा अल्पसंख्यक भाषाओं को बढ़ावा देने के लिए उठाए गए कदमों पर अपने विचार रखे। उन्होंने निष्कर्ष स्वरूप कहा कि हिंदी का प्रचार जितना संचार माध्यमों से हुआ है उतना कानून के माध्यम से नहीं हो पाया है और इस दिशा में शैक्षणिक संस्थाओं को भी सक्रिय योगदान देना होगा। इस दौरान उन्होंने दो किताबें केंद्रीय हिंदी संस्थान के पुस्तकालय को भेंट स्वरूप दीं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी संस्थान के माननीय निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने की। उन्होंने व्याख्यान में आए वक्ता प्रो. उदयनारायण सिंह का धन्यवाद करते हुए व्याख्यानमाला में श्रोताओं के लिए प्रश्नोत्तर योजना को शामिल करने का सुझाव दिया। प्रो. कुळकर्णी ने समय की महत्ता और संतुलन पर बल दिया।

उन्होंने देश की भाषा नीति के मुद्दे पर गहनता से सोचने की बात की और अंग्रेजी की महत्ता पर सवाल उठाते हुए 'नीयत और नियति' का सिद्धांत समझाया। उन्होंने भाषाई नीति में 'साफ नीयत' की कमी को बाधक बताया और अपनी भाषाओं की ओर लौटने का आह्वान किया।

उन्होंने केंद्र सरकार की भाषाई नीति से संबंधित योजनाओं का भी उल्लेख किया, जिसमें 22 भाषाओं में साढ़े तीन लाख पाठ्यपुस्तकें बनाने और पथ निर्माण जैसी योजनाएँ शामिल हैं। प्रो. कुळकर्णी ने हिंदी की महत्ता को रेखांकित करते हुए इंजीनियरिंग, मेडिकल और न्यायालय जैसे क्षेत्रों में हिंदी के प्रयोग के आँकड़े प्रस्तुत किए और इसमें निहित रोजगार की अपार संभावनाओं पर भी चर्चा की। भाषिक सुदृढ़ता के लिए प्रत्यक्ष प्रयास की आवश्यकता पर भी बल देने की बात की और इस व्याख्यानमाला को सार्थक बताते हुए इस पहल को महत्वपूर्ण बताया।

उन्होंने कहा कि यह व्याख्यानमाला ऐसे अनुत्तरित प्रश्नों का समाधान प्रदान करेगी जिनकी जिज्ञासा बनी हुई है और इसे संस्थान द्वारा ई-कंटेंट के रूप में भी उपलब्ध कराया जाएगा।

उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि भाषा ही हमें पशुओं से अलग करती है और हमें अपनी भाषाओं के प्रति गंभीर चिंतन की आवश्यकता है।

इस सार्थक व्याख्यानमाला का सफलतापूर्वक आयोजन अनुसंधान एवं भाषा विकास विभाग, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के विभागाध्यक्ष डॉ. अरिमर्दन कुमार त्रिपाठी द्वारा किया गया। मंच संचालन डॉ. पुरुषोत्तम पाटील ने किया। इस अवसर पर संस्थान के सभी विभागों के विभागाध्यक्ष, अध्यापक गण, विद्यार्थी एवं कर्मचारीगणों की गरिमामयी उपस्थिति रही। अंत में डॉ. परमान सिंह ने उपस्थित सभी गणमान्य व्यक्तियों का धन्यवाद ज्ञापन किया। ❑

संरक्षक
प्रो. सुरेन्द्र दुबे

प्रधान संपादक
प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी

संपादक
डॉ. अपर्णा सारस्वत

संपादन सहयोग
अनिल तिवारी

टाइप सेटिंग
योगेन्द्र सिंह राणा

मुद्रक : एजुकेशनल स्टोर्स, गाजियाबाद (उ.प्र.)

संस्थान समाचार में प्रकाशित समाचारों का स्रोत केंद्रीय हिंदी संस्थान के विभिन्न विभागों/केंद्रों से प्राप्त सामग्री है। संस्थान समाचार के संबंध में अपनी प्रतिक्रिया और सुझाव संपादक के पास भेज सकते हैं। संस्थान समाचार का ई-मेल:
sansthansamacharkhs2021@gmail.com

सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल आगरा-282005 द्वारा वितरण हेतु दिल्ली केंद्र से प्रकाशित।